IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Hindu Dharamantaran Ek Sazish Niyati Athva Kuch Aur

(हिन्दू धर्मांतरण एक साजिश नियति अथवा कुछ और)

नवनीत कुमार

प्रशिक्षक एवंम शोधकर्ता, पब्लिश्ड हिंदी ऑथर [1], एम् ए (हिन्दू स्टडीज) ईग्नू (इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय)

ORCID 0009-0001-5042-8502

सारांश

सरकारों की नाकामी कहें अथवा वोट बैंक का चक्कर | सदियों से हिन्दुओं पर अत्याचार, उनका नरसंहार, शोषण और **जबरन धर्मांतरण** अनवरत् जारी है | ऋषियों की तपोभूमि भारत में **धर्मांतरण** महज कोई संजोग नहीं | वरन एक कुटिल साजिश है | पुर्तगालियों से लेकर, मुस्लिम आक्रान्ताओं, विदेशी ताकतों (अंग्रेजों), और निक्कमी सरकारों तथा देश में छुपे जयचंदों ने | विश्वासघात कर हमारी बहन-बेटियों की अस्मत को लूटा, और मानवता को लहू-लुहान किया | तथा जातिवाद और धर्म के नाम पर हमें आपस में लडवा | श्रृष्टि का जघन्य अपराध लोग भी ऐसे मूढ़मति जो हिन्दू धर्म को बंदिश, तो गैर मजहब अथवा पंथ को आजादी मान, सुरसा दानव की और बढ़ चले | खिलजी दशकों पूर्व नालंदा को जला गया था [2] | परन्तु वर्तमान में साधन संपन्न होकर भी हम अपनी वैदिक शिक्षाओं, हिन्दू ज्ञान और परम्पराओं से अनभिज्ञ है | जल्द नहीं चेते, तो धर्मांतरण का दानव | सर्वप्रथम हिन्दुत्व और फिर सम्पूर्ण विश्व को निगल जाएगा |

मुख्य शब्द : धर्मांतरण, क्रिस्चियन धर्म, हिंदुँत्व, मोदी सरकार, धार्मिक शिक्षा, बाइबल, कुरान, जातिवाद, धर्मनिरपेक्षता, मानवाधिकार, भीमराव आंबेडकर

प्रस्तावना

"धर्मो रक्षति रक्षितः" जो भी प्राणी धर्म की रक्षा करता है अंततः धर्म उसकी रक्षा अवश्य करता है | तपस्वियों का देश भारत, युग युगांतर से "सर्व जन हिताय और सर्व जन सुखाय" | सभी लोगों के भले और सुख की सुखद कामना करता है | बावजूद इसके **धर्मांतरण नामक भुजंग** करोड़ों सनातनी हिन्दुओं को निगल चुका है | अब चाहे इसे धर्म के प्रति हमारी विमुढ़ता कहें | अथवा राजनीति का प्रपंच | समाज के ठेकेदारों, भ्रष्ट नेताओं और पाश्चात्य संस्कृति ने हमारे समाज को विकृत और भ्रमित कर दिया है | पुर्तगालियों से आरम्भ हुआ धर्मांतरण वर्तमान तक अनवरत् जारी है | बात लव-जिहाद की हो अथवा गजवा ए हिन्द की | मिशनरीज के लुभावने वादों (प्रलोभनो) ने हाशिए पर पड़े विशेष वर्गों को धर्म परिवर्तन में झोंक दिया है | और ये मात्र संजोग नहीं वरन एक सोची-समझी साजिश है | ताकि हिन्दू, हिंदुँत्व और भारत विकास की दौड में पिछड़ता जाए | **हिमशैल** [3] की (ICEBERG) तरह धर्मांतरण जितना दिखाई पड़ता है उससे कहीं अधिक गहरा और खतरनाक है | जो हिन्दू-धर्म के मार्ग में बाधा बन उसे डुबोना चाहता है | विशलेषण करें तो ज्ञात होता है की | इस दानव का वध अतिआवश्यक और संभव है | बशर्त की सर्वप्रथम प्रत्येक भारतवासी, विशेषकर हिन्दू लोग (युवा वर्ग) | जीवन की "धींगा मस्ती" को त्याग इस विषय पर बात करें | भारतीय परम्पराओं और हिन्दू अध्ययन में रूचि दिखाए | तदुपरान्त सरकारें तुष्टीकरण की नीतियों को त्याग | भारत को विश्वगुरू बनाने पर जोर दें | क्योंकि हिन्दू सनातन धर्म जैसा एक भी उदाहरण इस धरा (पृथ्वी) पर मौजूद नहीं है |

साहित्य समीक्षा

मैं गर्वित हूँ की मैं एक ऐसे धर्म और देश से सम्बन्ध रखता हूँ जिसने संसार को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढाया, हमारे लिए सभी धर्म समान और सम्मानिए हैं – **स्वामी विवेकानंद**

भारत में हिन्दुओं का धर्मांतरण महज कोई संजोग अथवा साजिश ?

शांति और अहिंसा, हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांतों में से एक है | जहाँ विश्व में युद्ध, अशांति और उथलपुथल का माहौल है | तो वहीँ हम भारतीय प्रेम, भाईचारे और धर्मानुसार आचरण कर सम्पूर्ण चराचर को ईश्वर का स्वरुप मानते है | बृहदारण्यक उपनिषद उद्धत श्लोक **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** अर्थात समस्त प्राणी सुखी हों | यही समस्त हिंदूवादी लोगों की कामना है | [4]

पृथ्वी पर चार युग - सतयुग, त्रेता, द्वापर और आज कलयुग में भी | समस्त हिन्दू (सनातनी) रामराज्य की परिकल्पना करते हुए मर्यादित जीवन जीते है | तो ऐसे में सोचने वाली बात ये है | की आखिर समस्या पनप कहाँ रही है | क्योंकि एक ऐसा **सुशाषित देश** | जहाँ अधिकतम लोग न्याय पा प्रसन्न और स्वस्थ रहते हो | तथा भौतिक तरक्की अथवा घृणा के जाल को त्याग | सत्य और धर्म द्वारा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" श्लोक को चरितार्थ करते हो | वह देश अर्थात भारतवर्ष वर्तमान में भी रामराज्य अथवा स्वर्ग के समान है | [5]

तो इस प्रकार अगर हिन्दू शांतिप्रिय लोग है | तो सुईं जा कर टिकती है | हमारे बीच पनप रहे "जयचंदों" पर [6] तथा हमसे द्वेष रखने वाली विदेशी ताकतों पर | स्वाभाविक है की उन्हें हमारी खुशहाली कहाँ रास आएगी? तो ऐसे में षड्यंत्रों का होना सत्य प्रतीत होता है | अब चाहे वह पडोसी देशों द्वारा किया जाये | अथवा खुद को संसार का मसीहा कहलाने वाले अमेरिका इत्यादि द्वारा | बाकि समझदार को तो इशारा ही काफी है |

आगे बढ़ने से पहले, धर्म परिवर्तन के कुछ सामान्य प्रकारों को जानना अतिआवश्यक है | जिन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है | [7]

- जानबूझकर स्वयं का धर्म त्याग, किसी दूसरे धर्म को अपनाना | धर्मांतरण कहलाता है |
- धन लाभ अथवा अन्य भौतिक सुखों के लालच में आकर दुसरे धर्म को अपनाना | धर्मांतरण कहलाता है |
- जबरदस्ती, यातना अथवा प्रताड़ित होकर | खुद की इच्छा के विरुद्ध धर्म परिवर्तन करना | धर्मांतरण कहलाता है |
- **नोट:** सनद रहे की शब्द धर्मांतरण और धर्म-परिवर्तन पृथक नहीं वरन एक ही है |

धर्मांतरण ईसाईयों द्वारा किया गया हो अथवा मुस्लिमों द्वारा | भारत में धर्मांतरण का इतिहास सदियों पुराना है | इतिहासकारों की माने तो वर्ष 712 में (प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी) "मुहम्मद कासिम" ने सिंध पर आक्रमण कर | हिन्दू मंदिरों को तोडा, लूटपाट की, हिन्दुओं का नरसंहार किया | और फिर जबरन धर्मांतरण करवा उन्हें मुस्लिम बनाया | तदुपरान्त महमूद गजनवी और मोहम्मद गौरी के आक्रमण हुए | परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई | [7] आगे औरंगजेब से लेकर टीपू सुल्तान, तथा कई सूफी संतों और हैदराबाद के निजामों तक ने धर्मांतरण और हिन्दुओं को बरगलाने अथवा उनपर अत्याचार करने का सिलसिला जारी रखा |

ठीक इसी तरह विभिन्न ईसाई देशों ने भी भारत में ईसाइयत को फैलाया | वर्ष 1498 में पुर्तगालियों ने वास्को डी गामा का अनुसरण करते हुए भारत में प्रवेश किया | तथा व्यापार के विस्तार को भूल वह भी ईसाइयत के प्रचार में जुट गए | वर्ष 1542 में पुर्तगाली राजा जॉन द्वितीय ने "सेंट जैविएर" को गोवा में हिन्दुओं के धर्मांतरण हेतु भारत भेजा | इससे पूर्व पुर्तगाली चालाकी-पूर्वक रात के समय ब्रेड के टुकड़ों को हिन्दुओं के कुओं में फैंक देते थे |

और जब अनजाने में भारतीय लोग उन्ही कुओं का पानी पी लेते थे | तो पुर्तगाली भ्रम फैलाते हुए | यह घोषणा करते थे | की चूँकि तुमने हमारे जल को ग्रहण कर लिया है | तो अब तुम भी हमारी तरह इसाई बन चुके हो | जिसपर अज्ञानता अथवा गलानी के चलते अनेकों हिन्दू अपना धर्म त्याग ईसाइयत को स्वीकार कर लेते थे | [7]

आगे ब्रिटिशों के आने पर भी यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा | जिसमे लोगों ने सरकारी नौकरियों के लालच, धन के लोभ इत्यादि के चलते ईसाइयत को अपना लिया | रही सही कसर अंग्रेज शिक्षाविद्ध "लार्ड मैकाले" की षड्यंत्रकारी "हिन्दू विरोधी" शिक्षा निति ने पूरी कर दी | अंग्रेजी शिक्षा के आते ही, लोग अपनी जड़ों और विरासत को भूलने लगे | जिसका विनाशकारी प्रभाव वर्तमान तक हमें जकड़े हुए है | [7]

समय बीता हम अंग्रेजों से तो आजाद हो गए | लेकिन मुस्लिम लीग की स्थापना और उसकी **"गजवा ए हिन्द"** [8] वाली नीतियों से हिन्दुओं का दमन चक्र हिन्दुओं को निरंतर कुचलता रहा | वहीँ दूसरी और आजादी के उपरान्त प्रधानमंत्री नेहरु ने आर्टिकल

25 ए के तहत ईसाईयों को अपने धर्म प्रचार और प्रसार की खुली छूट दे धर्मांतरण को हवा दी | जिसके चलते 1 प्रतिशत से भी कम आबादी वाले इसाई वर्तमान में 3 प्रतिशत से अधिक का आंकड़ा छु चुके है | विडंबना देखिए की (इन मिशनरी) षड्यंत्रों के चलते | भारतीय सरकारों के पास, धर्मान्तिरित इसाई जनसंख्या के सटीक आंकडें उपलब्ध नहीं है | जो की अमूमन 6 से 7 प्रतिशत होने की प्रबल सम्भावना है | [9]

वर्ष 1955 में **जस्टिस भवानी शंकर नियोगी** की अध्यक्षतावाली कमेटी ने साफ़ किया | की कैसे इसाई मिशनरी भारत में राजनितिक उथलपुथल हेतु फ्री विल का उपयोग कर रहे है | कहते है की इस सिफारिश को भी जवाहरलाल नेहरु ने सिरे से नकार दिया | क्योंकि आजादी के बाद, आर्थिक एवं कृषि अस्थिरता के चलते | अमेरिका ने भारत को सशर्त गेहूं भेजा था | की नेहरू इसाई मिशनरीयों को धर्म प्रचार और प्रसार की खुली छूट देंगें | जिसे नेहरू ने तुरन्त मान भी लिया | ईसाइयत का वही बीजारोपण आज विशाल कटीला वृक्ष बन, हिन्दुओं की भावनाओं और हिन्दू धर्म को आहत कर रहा है | [7]

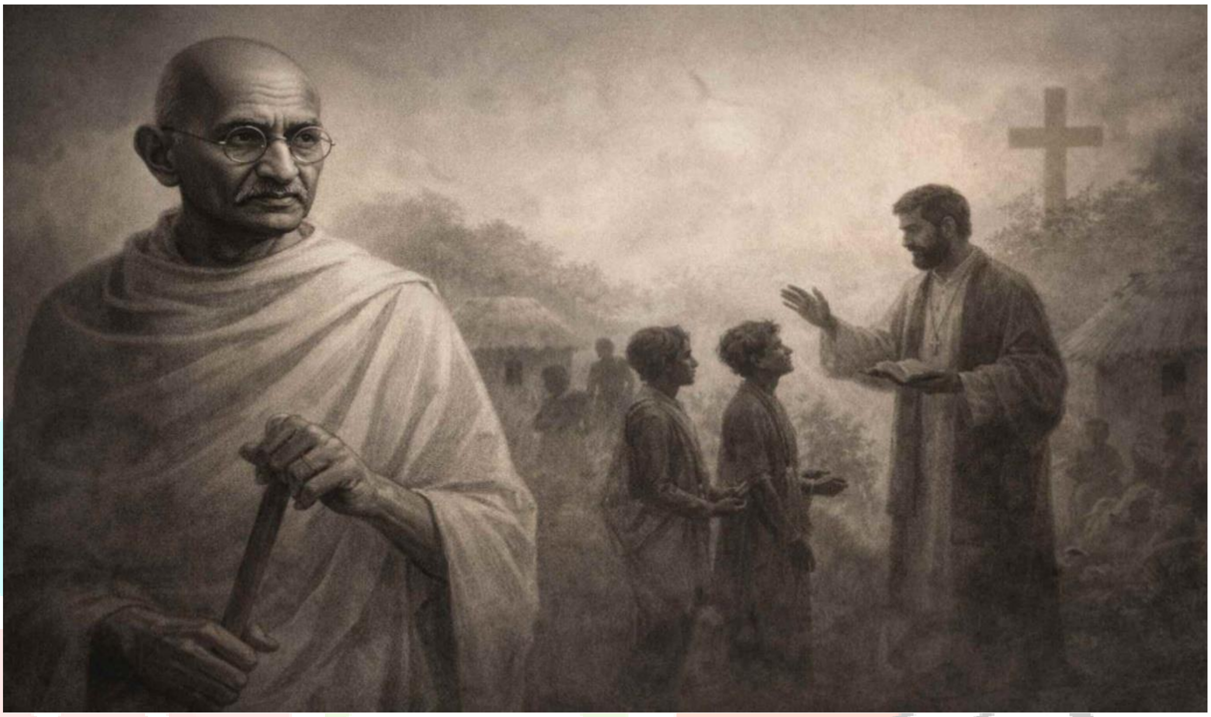

Figure 1चित्र साभार – नैरेटिव वर्ल्ड

फ्रेंच जर्नलिस्ट Mr. Francois Gautier की माने तो | **सोनिया गाँधी** जो की स्वयं इसाई मूल से है ने | कांग्रेस पार्टी के सर्वोच्य पद पर रहते हुए | तकरीबन 4 हजार से अधिक इसाई मिशनरीज को | भारत के विभिन्न भागों में धर्मांतरण हेतु पोषित और संरक्षित किया | परिणामस्वरूप इसाई धर्मांतरण का वह व्यापार कांग्रेस शासनकाल में पुरजोर फला-फूला | [7]

मसलन की आप पाकिस्तान से सटते, पंजाब के विभिन्न सीमावर्ती शहरों | अमृतसर, गुरदासपुर, जालन्धर और पटियाला पर नजर डालिए | यहाँ सैकड़ों गिरजाघर पनप चुके है | जहाँ मिशनरीज द्वारा हजारों सिक्खों का धर्म परिवर्तन करवाकर उन्हें क्रिश्चियनीटी में कन्वर्ट किया जा चुका है | गुरदासपुर के एक पादरी सैमुअल [9] व्यक्तिगत रूप से ईसाइयत का प्रचार धड्हल्ले से करते हुए बताते है | की पंजाब से सभी वर्गों के लोग उनके पास आते है | पादरी सैमुअल की माने तो ऐसा कोई भी व्यक्ति, जिसे बाइबल का ज्ञान हो | वह धर्म प्रचार और विशेष कार्यों के लिए पास्टर बन सकता है | [9]

इसके इलावा मोहाली, बटाला, अजनाला, फतेहगढ़ चूड़िया, डेरा बाबा नानक और मजीठा में इस काम के लिए विशेष डेरे बने हुए है | जहाँ तथाकथित पास्टर द्वारा प्रचार और धर्मांतरण को अंजाम दिया जाता है | [9]

फतेहगढ़ चूडियाँ के फादर जॉन की माने तो | पंजाब में ढेरों सिक्ख लोगों ने इसाई धर्म स्वीकार किया हैं | परन्तु धर्मांतरण के सटीक आंकड़ों का उन्हें कोई ज्ञान नहीं है | [9] यहाँ हैरत इस बात की भी है | की भारत में लोगों ने धर्मांतरण तो करवा लिया | परन्तु उन्होंने स्वयं का नाम नहीं बदला |

सीमावर्ती इलाक़ों में जो भी धर्म परिवर्तन हो रहा है | उसमे अधिकांश लोग ग़रीब और दलित वर्ग से आते है | जानकार बताते है की हजारों दलित वास्तव में अब ईसाई बन चुके है | परन्तु सरकारी कागजों में वह दलित ही हैं | क्योकि भारत में ईसाई समुदाय आरक्षण की श्रेणी में नहीं आता | इसलिए धर्मांतरण करवा चुके अधिकतम लोगों ने, ना तो अपना नाम बदला है | और

ना ही वह कोई निशानी अथवा चीज़ इत्यादि पहनते हैं | जिससे दुनिया अथवा सरकार को ये पता चल सके की | वह अपना धर्म त्याग, ईसाई इत्यादि बन चुके है | [9]

तथ्यों को देखकर तो यही लगता है | की भारत में हिन्दुओं का धर्मांतरण, महज कोई संजोग नहीं | वरन एक सोची समझी साजिश और गहरा षड्यंत्र है | जिसे काउंटर (अर्थात जिसका इलाज) किए बिना ये सिलसिला थमने वाला नहीं है |

धर्मांतरण (धर्म परिवर्तन) के मूल कारण

भारत एकल धर्म समाज नहीं, वरन बहु-धर्म समाज वाला देश है | चूँकि धर्मांतरण एक जटिल और व्यक्तिगत प्रक्रिया है | तो इसमें व्यक्ति की सामाजिक स्तिथि, आर्थिक स्तिथि, उसके शैषिक स्तर इत्यादि का मूल्यांकन करना जरुरी हो जाता है | जैसे की अगर व्यक्ति की आर्थिक दशा ठीक नहीं है | तो उसे धन, नौकरी, व्यापार में सहयोग, फ्री सेवाओं, मुफ्त राशन अथवा घर इत्यादि का प्रलोभन देकर फुसलाना सरल होता है |

पूर्व से लेकर वर्तमान तक | नीची अथवा पिछड़ी जाति, और आर्थिक रूप से दुर्बल वर्गों को धर्मांतरण हेतु इजी (सरल) टारगेट माना जाता है | और अधिकतम ऐसे ही लोग कन्वर्ट भी होते है | सरकारों को इसपर ध्यान देने की तुरन्त आवश्यकता है |

समाज में व्याप्त उंच-नीच, असमानता के भाव, जाति-पाति और हाशिए पर पड़े कुछ वर्ग | अक्सर समानता, सम्मान, पहचान और प्रतिष्ठा के लालच में | अपने धर्म को त्याग धर्मांतरण की और उन्मुख होते दिखाई पड़ते है | चूँकि यहाँ कमजोरी और खामियां हमारी भी है | तो विरोधी तत्व इसे भारत की नियति कहने से नहीं चूकते |

इसके इलावा अशिक्षा अथवा अल्पज्ञान के चलते भी अनेकों लोग अपने अधिकारों और धर्म की बारीकियों से बेखबर | षड्यंत्रकारियों के चंगुल में फंस धर्म परिवर्तन की और कदम बढ़ा ही लेते है |

वर्तमान में लव जिहाद, अथवा अंतर्धार्मिक विवाह के मामले अपने चरम पर है | जिसमे स्वेच्छा अथवा जोर जबरदस्ती यां फिर ब्लैक-मेलिंग के चलते युवा, **विशेषकर हिन्दू युवतियां** धर्मांतरण के जाल में फंसकर अपनी अस्मत और जान दोनों गवां बैठती है |

इसके इलावा अनेकोंबार जब व्यक्ति को अपनी धर्म प्रणाली जटिल | तो दूसरा धर्म सरल दिखाई पड़ता है | तो भी व्यक्ति धर्म परिवर्तन/ अथवा धर्मांतरण की और बढ़ने लगता है | अनेकों बार तो लोगों को जोर जबरदस्ती, झूठ का सहारा, बलपूर्वक यां फिर बरगलाकर धर्मांतरण में झोंक दिया जाता है |

बहुत कुछ ऐसा भी है | जिसे जानकर आपको हैरानी होगी | अर्थात वह बातें जो भारत में धर्मांतरण को बढ़ावा अथवा सहूलियत देती है | यहाँ एक नहीं वरन ढेरों ऐसे कारण है | जो धर्मांतरण के लिए टारगेट किए गए हिन्दुओं को | पढाए, दिखाए और समझाए जाते है | विस्तार से जानने हेतु नीचे दी गयी जानकारियों को आत्मसात् करें | [10]

धर्मांतरण हेतु लोगों को दिए जाने वाले लालच अथवा प्रलोभन |

1. अब आप पुराने, उबाऊ और घिसे पीटे नामों की जगह | खुद को आधुनिक विदेशी नामों से अलंकृत कर सकते है | जैसे की अल्बर्ट, जॉन, पीटर, विक्टर, मरिया और सैम इत्यादि |
2. अब आपको धन, शिक्षा, संरक्षण अथवा ज्ञान कुछ भी चाहिए हो | वह धर्मांतरण के बाद आपको सुलभता से प्राप्त हो जाएगा |
3. एकबार धर्मांतरण हुआ नहीं की | आप पाप-पुण्य, धर्म-कर्म और मोक्ष की अवधारणा से आजाद हो स्वछंद जीवन जी सकते है | और अगर आप गलती से पाप कर भी दें | तो घबराने का नहीं, क्योंकि इशु मसीह ने पहले ही (यानि की एडवांस में) अपने अनुयायीयों द्वारा किए गए पापों अथवा होने वाले पापों के लिए अपना रक्त बहा दिया है |
4. कहने का भाव की अब आप पूर्ण आजादी | और स्वछंदतापूर्वक जीवन जियो | यानि की समाज से बेख़ौफ और बेरोकटोक गर्लफ्रेंड बनाओं, मस्ती करो | मदिरापान करो, धूम्रपान करो अथवा बीफ (मांस) खाओ | यहाँ आपको कोई रोकने टोकने वाला नहीं | क्योंकि धर्मांतरण होते ही आप धर्म, समाज और हिंदुत्व की बेड़ियों से आजाद है | [10]
5. इसके इलावा क्रिस्चियन धर्म को अपनाकर आप, ढेरों पैसा भी बचा सकते है | क्रिशचन बनते ही आपको दीपावली, दशहरा, होली, रक्षाबंधन, सक्रांति और नवरात्रि जैसे धार्मिक अनुष्ठानों पर खर्च नहीं करना पड़ेगा | यानि की धन और समय दोनों की बचत |
6. अब आपको यीशु मसीह के इलावा | किसी भी अन्य (देवी-देवता) के आगे शीश नहीं झुकाना पड़ेगा |
7. देखा ? है ना कितना आसान और मजेदार | हिन्दू धर्म को त्याग क्रिश्चियन अथवा मुस्लिम बनना |

8. साथ ही अब आपको ढेरों धर्म ग्रंथो, वेद-पुराण, उपनिषदों, ब्रहम सूत्रों, योग सूत्रों, नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, रामायण, श्रीमद् भागवत गीता, विष्णु पुराण, शिव पुराण, शक्ति पूजा, देवता पूजा, कुलदेवी पूजन इत्यादि | किसी में भी सिर नहीं खपाना है | बस एकमात्र बाइबल/ अथवा कुरान पढो, परमात्मा के संदेशो को सुनो, सप्ताह में एकबार चर्च जाओ और आनंदित रहो | [10]

9. अब ना तो मंदिर जाना | ना गंगा स्नान और ना ही कुम्भ इत्यादि का चक्कर | अब आपको रातभर जागरण भी नहीं करना | और ना ही किसी पेड़, पत्थर अथवा पाषाण मूर्ति को पूजना है | चूँकि अब ढेरों समय बचता है | तो फिर घूमो फिरो और अपनी लाइफ को एन्जॉय करो |

10. धर्मांतरण करते ही गूढ़ हिंदी अथवा संस्कृत को पढने की अनिवार्यता समाप्त | और अब आपको जटिल मंत्रोचारण अथवा श्लोकों को याद करने की बाध्यता भी नही है | यानि की अब जो चाहे पढो, देखो अथवा सुनो कोई कठिनाई नहीं | [10]

11. इसके इलावा धर्मांतरण के बाद आपको, नीरस (यानि की बोरिंग) भजन-कीर्तन से भी आजादी मिलने वाली है | अब आपको मन को उच्चाट करने वाला हारमोनियम, तबला और तानपुरा इत्यादि नहीं बजाना पड़ेगा | बस म्यूजिक सिस्टम ऑन करो और मस्त तड़क-भड़क वाले | विदेशी गाने और म्यूजिक सुनो |

12. कम शब्दों में कहूँ तो धर्मांतरण करवाओं और सुख से जियो | जन्म और मृत्यु के बंधन से छुटकारा पाओ | ना कल की चिंता, और ना आज की फिकर | ना तो पाप-कर्मों और यमराज का चक्कर | और यक़ीनन फैंसले वाले दिन इशु मसीह (परमात्मा) आपको खुद भवसागर से तार देगा | [10]

13. बस बाप्टीज़म (BAPTISM) करवाओ | और बाकि सबकुछ पास्टर, पादरी और इशु मसीह पर छोड़ दो | क्योंकि क्रिस्चियन अथवा मुस्लिम बनते ही | आप हिन्दू धर्म की जटिल प्रणालियों, परम्पराओं और उंच नीच की दिवार से ऊपर उठ जाते हो | [10]

14. अब इसे कलयुग का प्रभाव कहें अथवा व्यवाहरिकता | विश्व में पिछड़े, कमजोर, सताए अथवा निर्धन लोगों को | "धर्मांतरण" सरल और प्रतिष्ठापूर्ण लगता है | बाकि सच्चाई क्या है? यह तो आने वाले समय द्वारा अथवा आपको इस शोधपत्र में वर्णित तथ्यों से ज्ञात हो ही जायगा |

धर्मांतरण – भारतवर्ष की नियति कैसे हो सकती है ?

संविधान निर्माता **बी.आर. अंबेडकर** ने जातिवादी हिंदू सामाजिक व्यवस्था से | सामाजिक मुक्ति के साधन के रूप में, धर्मांतरण का समर्थन किया था | बीसवीं शताब्दी से ही विभिन्न दलित समूहों ने इस्लाम, ईसाइयत, सिख धर्म और बौद्ध धर्म को अपना लिया था | अंबेडकर ने स्वयं एक सार्वजनिक समारोह में बौद्ध धर्म अपनाया था। [11]

कुछ संस्थान मानते है | की जब भी व्यक्ति का ह्रदय परिवर्तन होता है | अथवा उसे अन्दर से लगता है | की कोई दुसरा धर्म उसके वर्तमान धर्म से बेहतर है | तो भी वह धर्म परिवर्तन करता है | इसके इलावा जब भी किसी को मानवता अथवा धर्मनिरपेक्षता के आधार पर यह अनुभव होता है | की जिस धर्म में वह जन्मा है | उससे कोई दूसरी विचारधारा बेहतर है | तो भी वह उक्त विचारधारा अथवा धर्म को अपना सकता है |

गहराई से समझें तो ज्ञात होगा की | विभिन्न कारणों के चलते भारत के दबे, कुचले और प्रताड़ित तबके | जिन्हें पूर्वकाल में ब्राहमणों, ऊँची जाति वाले साहूकारों, विशेष वर्ग और दबंगों ने नकारते हुए उनका ढेरों शोषण किया था | उन्ही लोगों ने तंग आकर, अपने धर्म को त्याग | एक ऐसे धर्म को अपनाया | जिसमे उन्हें समानता, भाईचारे और नयी पहचान का अहसास हुआ | भले ही यह सब छलावा था, बावजूद इसके लोग धर्मांतरण के चंगुल में फंस अपनी जड़ों और गौरवशाली विरासत से दूर होते चले गए |

वर्ष 2000-2001 में बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष, **बंगारू लक्ष्मण** ने मुस्लिम जनता को आकर्षित करते हुए | "पंच निष्ठ" सिद्धांत और जीवन में समावेशी दृष्टिकोण की वकालत की। हालांकि, अगले वर्ष तहलका स्टिंग ऑपरेशन में वह रिश्वतखोरी के दोषी पाए गए | और उनका राजनीतिक कैरियर वहीँ समाप्त हो गया | जबकि उन्होंने कहा था की **"Muslims are our Blood and Flesh"** भले ही यहाँ उनका अर्थ समानतावादी अथवा सहनशीलता से नहीं था | वरन वो कहना चाहते थे की समस्त मुस्लिम पहले हिन्दू ही थे | जो बाद में विभिन्न कारणों और घटनाक्रमों के चलते इस्लाम में कन्वर्ट हो गए | [12]

वर्तमान में ऐसे लोग, जो अक्सर अपने देश | अपनी सरकार, सेना, हिंदुँत्व और सनातन पर अंगुली उठाते है | उन्हें समझना होगा की भारत की धरमनिर्पेक्षता | और पश्चिमी देशों के सेक्लुरिजम में जमीन आसमान का अन्तर है | जैसे की अमेरिका अथवा इसाई आबादी वाले देशों में | सरकारों को केवल क्रिस्चियन विचारधारा और वहां की नास्तिक जनता से ही निपटना होता है | जबकि भारत में बीसियों भाषाएँ, कई सौ बोलियाँ, लोकव्यवहार, परम्पराएँ, मत, पंथ, समुदाय, जाति और कबीले है | जिनसे जुड़ें

लोगों का शैक्षिक और बौधिक स्तर एकदम जुदा है | तो ऐसे में विभिन्नता में एकता होने के बावजूद | सबको एकसाथ लेकर चलना, उतना भी सरल नहीं है | जितना की पश्चिमी देशों, जयचंदों यां फिर गौरे बाबू और विरोधी तत्वों को जान पड़ता है | [12]

छद्म धर्मनिरपेक्षता

जिसका वास्तविक धर्मनिरपेक्षता से कोई लेना देना नहीं होता | क्योंकि ये तो तुरुप का वो पत्ता है | जिसके प्रयोग मात्र से समाज में भ्रामक स्तिथियों का निर्माण होता है | तथा जिसका प्रयोग विभिन्न लोगों, संगठनो, राजनैतिक पार्टियों, नेताओं, विशिष्ट व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किया जाता है | जिसमे स्वांग करते हुए वह लोग ऊपर-ऊपर से तो एकता, देशभक्ति, भाईचारे और धर्मनिरपेक्षता की बातें करते है | लेकिन वास्तव में वह देश, धर्म और कौम को तोड़ने और आपस में लड़वाने का षड्यंत्र करते है |

हिन्दू युवतीओं का ब्रेनवाश कुछ और नहीं वरन एक साजिश

अब बात करें (वर्तमान के ताजे) टाटा कंसल्टेंसी सर्विस नासिक में घटित "धर्मांतरण" प्रकरण की | तो प्रथम-द्दष्टा देखने पर पीड़ितों सहित धर्मांतरण तथा यौन शोषण में लिप्त समस्त कर्मचारी | पूर्णतः शिक्षित और सभ्य दिखाई पड़ते है | यानि की पूर्व वर्णित चौदह पॉइंट्स जिनमे विभिन्न प्रलोभनों को दर्शाया गया था | यहाँ अर्थहीन प्रतीत होते है | बावजूद इसके भारत में हिन्दुओं के "धर्मांतरण" की कोशिशें और षड्यंत्र बदस्तूर जारी है | [13]

टाटा संस के चेयरमैन "एन चंद्रशेखरन" ने जांच कमेटी बिठाते हुए | तत्काल प्रभाव से सातों आरोपी स्टाफ को ससपेंड कर दिया | शोधपत्र लिखे जाने तक कंपनी की एक विशेष टीम | इसकी जांच कर रही है | आगे का फैंसला पुलिस और कोर्ट द्वारा संभव है | गौरतलब है की कंपनी की एक महिला कर्मचारी सहित आरोपी **आसिफ अंसारी, शफी शेख, शाहरुख कुरैशी, रज़ा मेमन, तौसीफ अत्तार और दानिश शेख** को गिरफ्तार किया जा चुका है | आरोपियों पर लगाए गए आरोपों में कार्यस्थल पर धर्म परिवर्तन के प्रयास शामिल हैं. ये घटनाएँ फरवरी 2022 और मार्च 2026 के बीच हुईं है | [13]

गौरतलब है की इस मामले में कोई भी अशिक्षा अथवा जातिवाद नहीं था | बावजूद इसके देश और हिन्दू धर्म विरोधी लोग आज भी धर्मांतरण और हिन्दू युवतियों को बहलाने फुसलाने से बाज नहीं आ रहे है | जो कहीं ना कहीं एक साजिश और धर्म के प्रति हिन्दुओं (विशेषकर युवाओं) की उदासीनता को दर्शाता है |

सनद रहे – हर शाख पर उल्लू बैठा है

धर्मांतरण और ब्रेनवाश की एक अन्य कहानी **दिव्या जैन** की है | वर्ष था 2011, और स्थान है टेक्सास यानि की अमेरिका | [14] दिव्या बताती है की अच्छे नम्बरों से पास हो उन्होंने एक टॉप विदेशी कॉलेज में दाखिला लिया | चूँकि मामला विदेश का था | तो ऐसे में थोडा अकेलापन और मन में बैचेनी से वह अक्सर क्षुब्ध रहती थी |

जिसे भांपा उनके कुछ शिकारी मित्रों ने | बातचीत और मुलाकातें बढ़ी तो उन्होंने दिव्या को एक गेट टू गैदर में बुलाया | दिव्या को लगा शायद कोई (MLM Company) की मीटिंग होगी | जिसमे नए लोगों को जोड़ना होता है | परन्तु एक-दो मीटिंगस के बाद, बात चर्च जाने तक पहुँच गयी | चूँकि अनुरोध मित्रों ने किया था | तो दिव्या चर्च चली गयी | ये सोच की चलों कुछ नया देखने और सिखने को मिलेगा | और संभव है की कुछ नए मित्र भी बन जाएँ | तो छोटे ग्रुप से शुरू हुआ ये सफ़र 5-7 लड़कियों के ग्रुप तक जा पहुंचा | जिसमे साप्ताहिक मीटिंग्स के अंतर्गत नियमित रूप से बाइबल की चर्चा भी होने लगी |

यानि की अब शिकारी ग्रुप मुद्दे की और बढ़ने लगा था | दिव्या बताती है की बाइबल चाहे कुछ भी कहें | परन्तु मेरी निष्ठा और विश्वाश तो हिन्दू धर्म में है | और मेरा हिन्दू-धर्म केवल एकीश्वरवाद की बात नहीं करता | जिसपर तर्क दिया गया की बाइबल तो सीधे भगवान् ने लिखी है | इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की अन्य धर्म बाइबल के बारे में क्या कहते है | बात साफ़ थी की, उन्हें तो बस बाइबल और ईसाइयत को फैलाना और लोगों को धर्म परिवर्तन से जोड़ना था | अंततः एकदिन उन्होंने दिव्या से पूछ ही लिया | की तुम इसाई धर्म को कब अपना रही हो? अर्थात **When Will You Be Baptized**? [14]

दिव्या के लिए यह प्रश्न दिमाग पर हुई एक बमबारी जैसा था | यकीन मानिए लगभग दो वर्षों तक उस ग्रुप से जुड़े रहने और ईसाइयत पर चर्चा करते-करते | एक समय ऐसा भी आया जब दिव्या को हिन्दू धर्म और उसके रीतिरिवाज बंधन लगने लगे | जिसे वास्तव में रियल ब्रेनवाश कहा जाता है | वो कहते है ना की **"जैसी संगत वैसी रंगत"** | तो अब वर्ष 2014 में दिव्या ने ऐलान किया की वह Baptized होकर ईसाइयत को अपनाने वाली है | जिसे सुनकर उन शिकारी मित्रों के चेहरे पर तो जैसे कोई विजय मुस्कान लहरा गयी थी | संभवत वह खुश थे की अंततः उनका मिशन सफल रहा |

कहानी में रोचक मोड़ तो तब आया | जब दिव्या ने अपने बॉयफ्रेंड (जिसके साथ वह 2010 से संपर्क में थी) से विवाह किया | वह लड़का बस इतना ही जानता था की | दिव्या चर्च इत्यादि जाती है | परन्तु इस गुप्त Baptism प्रकरण से वह एकदम अनजान था | हिन्दू एवं इसाई धर्म पर वह खुलकर चर्चा भी कर चुके थे | लेकिन धर्म के प्रति आस्था और विश्वाश कहीं ना कहीं तो आकर टकराता ही है | अगले 6 महीने बाद दिव्या गर्भवती हुई | जिससे दिव्या की धर्म और विश्वाश को लेकर दुविधाएं बढ़ने लगी | प्रश्न ये भी था की होने वाला बालक क्रिस्चन धर्म अनुसार पलेगा अथवा हिन्दू धर्म रीति के अनुसार | [14]

दिव्या के पति के एक खास मित्र थे | जिनके द्वारा दिया गया एक तर्क, दिव्या को समय आनेपर काफी सटीक लगा | की **Hinduism is a karma-based religion, whereas Christianity is all faith-based** | खैर कुछ समय बाद घर में एक गुडिया ने जन्म लिया | ये सब तो ठीक था परन्तु दिव्या को ना जाने क्यों रह रहकर लगने लगा था | की काश उसने किसी क्रिस्चन लड़के से शादी की होती | तो धर्म और एकमतता को लेकर इतनी परेशानी नहीं होती | परिणामस्वरूप अब दिव्या अवसाद और टेंशन में रहने लगी | फिर एकदिन दिव्या ने उसी स्माल क्रिशचन ग्रुप से राय लेने की ठानी |

जाकर देखा तो ग्रुप की उक्त इसाई लड़की भी अपनी संतान को पाल रही थी | परन्तु उसके लालन-पालन में एक बड़ा फर्क था | फर्क ये था की वह लड़की अपने बालक को सिर्फ और सिर्फ "जीसस" तक ही सिमित रखना चाहती थी | क्योंकि यही इसाई धर्म में सिखाया जाता है | की इशु मसीह से ऊपर कुछ नहीं है | यानि की उन्हें तो बाइबल से आगे वर्तमान और व्यवहारिक जीवन को समझना ही नहीं था |

यानि की मुस्लिम के केवल एक अल्लाह की तरह उनका फोकस भी | एकमात्र इशु मसीह पर ही था | ये सब देख दिव्या को बहुत बड़ा झटका लगा | की यहाँ पर आकर तो उसका (सो काल्ड) इसाई धर्म डेड हो गया | यां यूँ कहें की वह डेड एंड पर पहुँच गया है | जिसपर दिव्या ने वापिस घर जाकर हिन्दू, जैन और इसाई धर्म को और अधिक गहराई से पढ़ना और समझना आरम्भ किया | [14]

परिणाम चौकानें वाले थे | क्योंकि जहाँ हिन्दू-धर्म सर्वधर्म सद्भभावना और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की बात करता है | तो वहीँ जीसस को ये स्वीकार्य नहीं की | उनका अनुयायी किसी और धर्म अथवा देवी देवता की बात तक करें | तो अब धीरे-धीरे दिव्या ने हिन्दू धर्म को और गहनतापूर्वक पढना और फॉलो करना आरम्भ किया | थोडा समय लगा और संशय के सारे बादल छंट गए |

और दिव्या को ज्ञात हुआ की | हिन्दू धर्म जैसा महान धर्म और विशाल ह्रदय वाले लोग | भारत के अतिरिक्त विश्व में अन्यत्र कहीं और निवास नहीं करते | तो इसप्रकार दिव्या ने घर वापसी की (अर्थात पुनः हिन्दू धर्म को अपनाया) और आज उनकी एक और बेटी भी है | जिसके साथ वह खुशहाल और भयमुक्त जीवन जी रही है | [14]

अंतिम बात – की धर्मांतरण रूपी दानव से कैसे निपटा जाए ?

महत्वपूर्ण तो ये है कि | सरकार चाहे किसी भी पार्टी की हो | नेताओं से निवेदन है की वह मुसलमान और ईसाइयों इत्यादि अल्पसंख्यकों का पक्ष ना ले। सभी को समान नजर से देखें और राष्ट्र सर्वोपरि नियम का सख्ती से पालन करें | क्योंकि एक ऐसा लोकतंत्र, जहाँ हर नेता अपना सम्पूर्ण ध्यान मात्र वोट बैंक पर ही केंद्रित करता है | हमें इस सोच और सिस्टम को शीघ्रतापूर्वक बदलना होगा | साथ ही इस विषय पर सभी को गहन विचार-विमर्श करते हुए | व्यवहारिक सोच को अपनाना होगा |

क्योंकि धर्मांतरण को रोकने | तथा देश और दुनिया को तरक्की के मार्ग पर लेजाने में | हिंदू समाज की अहम् भूमिका है | सर्वप्रथम, समाज में वैदिक ज्ञान, हिन्दू स्टडीज और हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांतों का व्यापक प्रचार और प्रसार अवश्य होना चाहिए। ताकि हिन्दू बालक-बालिकाएं आरम्भ से ही अपने धर्म और प्राप्त जानकारियों को आत्मसात कर सकें |

विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों द्वारा इसकी अच्छी शुरुआत संभव हैं | नई शिक्षा नीति 2020 के तहत अब भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) को शिक्षण संस्थानों (अर्थात पाठयकर्मो) में शामिल किया जा रहा है। हालांकि, ज्ञान के आभाव में अभी शिक्षको को भी गहन अध्ययन और मार्गदर्शन की आवश्यकता है | जो थोडा कठिन तो है परन्तु असंभव नहीं |

क्योंकि मंजिल पर पहुंचा वही जो घर से चल पड़ा |

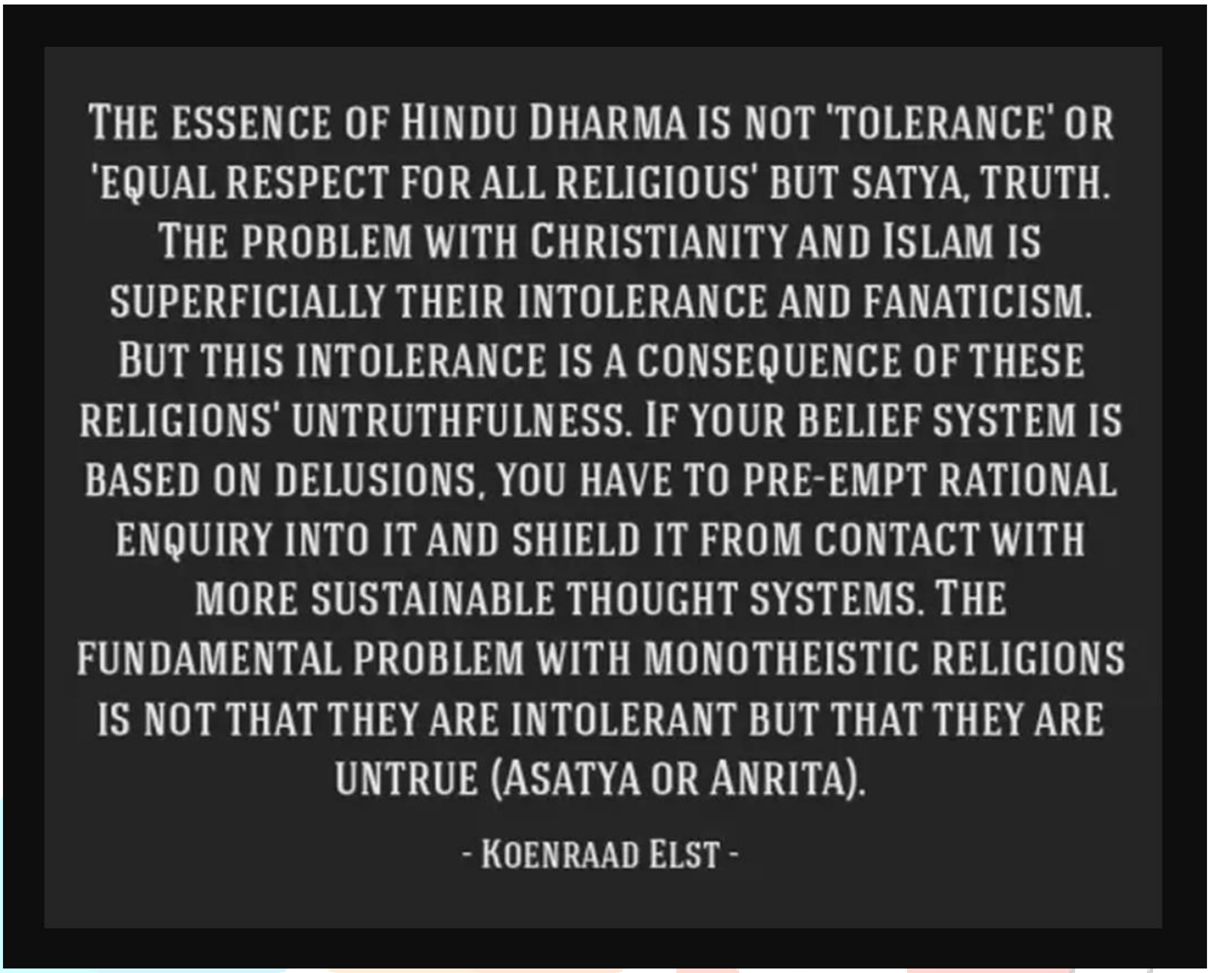

सन्दर्भ सूची

[1] K. Bhardwaj, भटकती दुनिया बिखरते लोग: प्रेरणादायक 21 कहानियां, Notion Press, 2021.

[2] द. भास्कर, “दैनिक भास्कर,” [ऑनलाइन]. Available: https://www.bhaskar.com/news/spl-bihel-know-about-nalanda-university-5059837-pho.html.

[3] C. D. Group, “Candor Diversity Group,” Candor Diversity Group, 14 August 2024. [ऑनलाइन]. Available: https://candorgroup.ca/neurodiversity/exploring-the-iceberg-theory/.

[4] ग. रस्तोगी, “योगा भारती,” [ऑनलाइन]. Available: https://yogabharati.org/article-blog/sarve-bhavantu-sukhinah.

[5] ड. नवीन, *International Journal of Advance Research and Multidisciplinary Trends,* संस्क. 2, क्र. October-December, p. 5, 2025.

[6] व. हिंदी, “जयचंद,” विकिपीडिया एक मुक्त ज्ञान कोष .

[7] ह. ज. स. वेबसाइट, “हिन्दू जनागृति समिति वेबसाइट,” हिन्दू जनागृति समिति वेबसाइट, [ऑनलाइन]. Available: https://www.hindujagruti.org/history-of-religious-conversions-in-bharat.

[8] आ. र. (शोधकर्ता), "ग़ज़वा-ए-हिन्द' की अधार्मिक, अप्रामाणिक कथा," Manohar Parikar Institute of Defense Studies and Analysis, 18 August 2023. [ऑनलाइन]. Available: https://idsa.in/publisher/issuebrief/the-irreligious-inauthentic-narrative-of-ghazwa-e-hind.

[9] स. स. ध. (संवाददाता), "बी बी सी हिंदी," 11 सितम्बर 2022. [ऑनलाइन]. Available: https://www.bbc.com/hindi/india-62835607.

[10] C. V. RAJAN, "Hinduism Way of Life," Hinduism Way of Life, 27 February 2018. [ऑनलाइन]. Available: https://hinduismwayoflife.com/2018/02/27/what-are-the-benefits-of-converting-to-christianity-from-hinduism-why-do-people-convert/.

[11] M. F. Bhattacharjee, "Babasaheb Ambedkar on Annihilation Through Conversion," Shahpedia, [ऑनलाइन]. Available: https://www.sahapedia.org/babasaheb-ambedkar-annihilation-through-conversion.

[12] स. कोलुरी, "Minority Existence and the Subject of (Religious) Conversion," *रिसर्च गेट,* संस्क. 14, p. 94, 2002.

[13] प. रंजन, "एन डी टी वी," एन डी टी वी , 13 April 2026. [ऑनलाइन]. Available: https://ndtv.in/maharashtra-news/tcs-suspends-nashik-employees-accused-of-harassment-and-religious-conversion-11352209.

[14] द. जैन, "हिन्दुइज्म टुडे," हिन्दुइज टुडे , 30 जून 2022 . [ऑनलाइन]. Available: https://www.hinduismtoday.com/culture-and-society/my-unfortunate-conversion/.